4

“उठ, और बपतिस्मा ले” (1)

पिछले पाठ के परिचय में उन नामों का उल्लेख था जिन्होंने वस्तुतः पूछा, कि “उद्धार पाने के लिए हम क्या करें ?” हर प्रश्न के उत्तर में बपतिस्मा आया। यहूदियों द्वारा यह पूछने के बाद कि “हे भाइयो, हम क्या करें ?” (प्रेरितों 2:37), पतरस ने उत्तर दिया, “मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से *बपतिस्मा* ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे” (प्रेरितों 2:38)। शाऊल के यह पूछने के बाद कि “हे प्रभु मैं क्या करूं ?” (प्रेरितों 22:10) उसे नगर में भेज दिया गया। वहां एक प्रचारक उसके पास आकर कहने लगा, “अब क्यों देर करता है ? उठ, *बपतिस्मा* ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल” (प्रेरितों 22:16)। दारोगे द्वारा यह पूछने के बाद कि, “हे साहिबो, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं ?” (प्रेरितों 16:30), उसे विश्वास करने के लिए कहा गया (प्रेरितों 16:31)। उसे और उसके परिवार को परमेश्वर का वचन सिखाया गया; फिर “उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त *बपतिस्मा* लिया” (प्रेरितों 16:33)।

अब तक हमने, विश्वास, पश्चात्ताप, और अंगीकार की आवश्यकता को प्रमाणित किया है। इस पाठ में हम देखेंगे कि प्रभु को प्रारम्भिक उत्तर देने के लिए मसीह में हमारा बपतिस्मा भी आवश्यक है। विश्वास, पश्चात्ताप, और अंगीकार के विषय में थोड़ा विवाद है; परन्तु, वर्षों से, बपतिस्मे के बारे में असहमति है। तथापि, इस प्रकार के विवाद का नये नियम के दिनों में कोई अस्तित्व नहीं था। यीशु के पीछे चलने का फैसला करने वाले सभी लोगों को बिना किसी प्रश्न के बपतिस्मा दिया जाता था।

बपतिस्मा: क्या है?

इससे पहले कि हम बपतिस्मे की बात करें, हमें समझ लेना चाहिए कि इस शब्द का अर्थ क्या है। “बपतिस्मा” एक लिप्यान्तरित यूनानी शब्द है। वर्षों पूर्व, यूनानी शब्द का अनुवाद करने के बजाय, किसी ने इसे हिन्दी का शब्द बना दिया था।[1] यूनानी भाषा में शब्द “बपतिस्मा” कुछ इस प्रकार है:[2]

βαπτισμοσ

यूनानी शब्द के दो रूप हैं: *बैपटिस्मॉस* (ऊपर दिया रूप) और *बपटिस्मा*। इसका क्रिया रूप *बैपटिज़ो* है। आप देख सकते हैं कि ये शब्द ''बपतिस्मा'' और ''बपतिस्मा देना'' से कितने मिलते-जुलते हैं।

''बपतिस्मा देना'' शब्द का क्या अर्थ है ? यदि आप किसी अंग्रेज़ी शब्दकोष में इस शब्द को देखें, तो आपको इस के कई अर्थ मिलेंगे, परन्तु ध्यान रखें कि शब्दकोष आपको इसका आधुनिक उपयोग देते हैं, बाइबल के अनुसार इसका अर्थ नहीं बताते। आप किसी *यूनानी* शब्दकोष में, जिसे लैक्सिकन कहा जाता है, देखकर *बैपटिज़ो* का अर्थ ढूंढ़ सकते हैं। *बैग्स्टर 'ज़ अनैलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* देखने पर आप पाएंगे कि *बैपटिज़ो* का मूल *बैपटो* है। शब्दों के इस परिवार में जो जानकारी आपको मिलेगी, उसका सारांश यह है:

बैपटो, ... गोता लगाना ...।
बैपटिज़ो, ... गोता लगाना, डुबोना ...।
बैपटिस्मा, ... डुबकी ...।
बैपटिस्मॉस, ... गोता अथवा डुबकी लगाने की क्रिया ...।

''बपतिस्मा देना'' का साधारण अर्थ है ''डुबोना,'' और ''बपतिस्मा'' का अर्थ है ''डुबकी।'' पतरस ने अपने सुनने वालों को मूलत: कहा, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए ... *डुबोया* जाए।'' हनन्याह ने शाऊल को मूलत: कहा, ''उठ, *डुबकी* लगा, और ... अपने पापों को धो डाल।''

''बपतिस्मा'' शब्द उस तत्व को स्पष्ट नहीं करता कि डुबकी किस में लगाई जानी है। यीशु ने दुखों में बपतिस्मा (डुबकी लगाई थी) लिया था (देखिए मरकुस 10:38, 39; लूका 12:50)। प्रेरितों को पवित्र आत्मा की सामर्थ में बपतिस्मा (गोता) दिया गया था (मत्ती 3:11; प्रेरितों 1:5; 2:1-4)। जिस बपतिस्मे का हम अध्ययन करेंगे, वह *पानी* में डुबकी लगाना है (जैसे प्रेरितों 8:36-38; 10:47, 48 में दिखाया गया है)।

बपतिस्मे की मूल परिभाषा डुबकी को मन में रखें। अपने अध्ययन में आगे बढ़ने पर यह हमें अधिक उलझन में पड़ने से बचाएगा।

इस और अगले पाठ में, हम तीन प्रश्न पूछेंगे: ''बपतिस्मा *क्यों* लेना चाहिए ?''; ''बपतिस्मा *कैसे* लेना चाहिए ?''; और ''बपतिस्मा *किसे* लेना चाहिए ?'' आइए ''क्यों ?'' से आरम्भ करते हैं।

यीशु द्वारा दिए गए निर्देश (मरकुस 16)

जब यीशु ने अपने चेलों को ग्रेट कमीशन अथवा महान आज्ञा दी, तो उसने उनसे कहा,

> इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ[3] और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें वे सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं (मत्ती 28:19, 20)।

यीशु की तरतीब

मरकुस द्वारा दिए गए ग्रेट कमीशन के वृत्तांत में इस प्रकार से लिखा है: "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले, उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा" (मरकुस 16:15, 16)।[4] यीशु इसे और अधिक आसान नहीं बना सकता था। यदि हम उद्धार पाना चाहते हैं, तो हमारे लिए विश्वास करना और बपतिस्मा लेना अनिवार्य है।

एक बार मैं ऐसे व्यक्ति के साथ अध्ययन कर रहा था, जिसकी पूर्व-धारणा बपतिस्मे के विरुद्ध थी। हमने बपतिस्मे के उद्देश्य के लिए आयतों को देखा, परन्तु उसने उनमें दी गई स्पष्ट शिक्षा को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। अन्त में, मैंने पूछा, "यदि प्रभु की इच्छा यह सिखाने की *थी* कि उद्धार के लिए बपतिस्मा ज़रूरी है तो वह इसे और स्पष्ट ढंग से कैसे व्यक्त कर सकता था?" उसने एक पल के लिए सोचा और फिर कहा, "यदि बपतिस्मा बिल्कुल ही अनिवार्य था, तो मैं सोचता हूं कि प्रभु इस प्रकार से कहता कि 'जो विश्वास करे *और* बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।' " उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उसने सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए मरकुस 16:16 में लिखी बात ही कह दी थी।

मरकुस 16:16 स्पष्ट है, परन्तु कभी-कभी यह विरोध सुनाई देता है: "इस आयत का अन्तिम भाग यह नहीं कहता कि जो विश्वास न करे *और बपतिस्मा न ले* वह दोषी ठहरेगा। यह केवल इतना ही कहता है कि जो *विश्वास* न करे, वह दोषी ठहराया जाएगा।" इस तर्क के लिए मेरा उत्तर यह है कि आयत के अन्तिम भाग में बपतिस्मे का उल्लेख अनावश्यक था।

ज़रा विचार करें: आयत 16 के पहले भाग में, विश्वास बपतिस्मे से पहले आता है। विश्वास प्रभु को दिए हमारे सभी उत्तरों का आधार है। यीशु में विश्वास के बिना, कोई पश्चात्ताप या अंगीकार नहीं करेगा। उसी प्रकार से, यीशु में विश्वास के बिना किसी को शास्त्र के अनुसार बपतिस्मा नहीं दिया जा सकता। विश्वास को खारिज करके जैसे आयत 16 का अन्तिम भाग करता है, स्वत: ही विश्वास, जिसमें बपतिस्मा सम्मिलित है, का *कोई* भी उत्तर, खारिज हो जाता है। इसलिए "और बपतिस्मा न ले" को जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

इस विचार को चित्रित करने के लिए, आइए कल्पना करते हैं कि मैंने एक गोदाम बनाने के लिए आपको भाड़े पर लिया है और मैं आपसे कहता हूं, "यदि तुम यह गोदाम बनाकर इस पर लाल पेन्ट कर दो, तो मैं तुम्हें 1,00,000 रुपये दूंगा।" आप समझ जाएंगे कि 1,00,000 रुपये पाने के लिए, आपको दो काम करने हैं: (1) गोदाम को बनाना है और (2) इसे लाल पेन्ट करना है। यदि मैं यह जोड़ दूं, "पर यदि तुम गोदाम को नहीं

बनाते, तो मैं तुम्हें 1,00,000 रुपये नहीं दूंगा'' तो इसका क्या अर्थ होगा ? क्या आप इस दूसरे वाक्य से यह निष्कर्ष निकालेंगे कि गोदाम को लाल पेन्ट करना अनावश्यक है ? नहीं, आप समझ जाएंगे कि गोदाम को बनाने में नाकामी अपने आप ही गोदाम को पेन्ट करना खारिज कर देगी। आखिर, एक ऐसे गोदाम को जो है ही नहीं, पेन्ट करना कैसे सम्भव हो सकता है। इसी प्रकार, यदि कोई पहले यीशु में विश्वास ही नहीं करता तो उसे वचन के अनुसार बपतिस्मा देना असंभव है।

पुन, मरकुस 16:15, 16 की सरलता को देखिए। परमेश्वर की योजना पग–पग बढ़ते हुए दी गई है:

(1) प्रचार (शिक्षा)
(2) विश्वास
(3) बपतिस्मा
(4) उद्धार

मनुष्यों की पुनः बनाई हुई तरतीब

दुर्भाग्य से, इन्सान कभी भी संतुष्ट नहीं हुआ और उसने नहीं चाहा कि वह प्रभु की सादगी को ऐसे ही रहने दे (पढ़िये 2 कुरिन्थियों 11:3)। पिछले एक पाठ में, हमने इस शिक्षा पर चर्चा की थी कि बच्चे आदम के पाप के दोष के साथ जन्म लेते हैं। कई लोग ज़ोर देते हैं कि बपतिस्मा[5] उस दोष को मिटाने के लिए आवश्यक है। उनकी शिक्षा के अनुसार, यदि कोई बच्चा बिना बपतिस्मे के मर जाता है, तो वह स्वर्ग में नहीं जा सकता।[6] ''शिशुओं के बपतिस्मे'' का समर्थन करने वाले कहते हैं कि जब ''बपतिस्मा पाया हुआ'' व्यक्ति एक निश्चित आयु तक पहुंचता है, तो उसे सिखाना और ''कन्फ़र्म''[7] करना आवश्यक होता है। वे प्रभु की आज्ञा को निम्नलिखित अनुसार पुनःतरतीब देते हैं:

(1) बपतिस्मा
(2) उद्धार
(3) शिक्षा
(4) विश्वास

स्पष्टतः, यह तरतीब प्रभु की तरतीब नहीं है:

यीशु	मनुष्य (क)
(1) प्रचार (शिक्षा)	(1) बपतिस्मा
(2) विश्वास	(2) उद्धार
(3) बपतिस्मा	(3) शिक्षा
(4) उद्धार	(4) विश्वास

संसार के कुछ भागों में, एक और शिक्षा पाई जाती है जिसकी चर्चा हम पहले ही कर चुके हैं: वह है ''केवल विश्वास'' के द्वारा उद्धार की शिक्षा। यह विचार रखने वाले हमें सिखाते हैं कि जैसे ही कोई यीशु में विश्वास लाता है, उसका उद्धार हो जाता है।[8] वे सिखाते हैं कि बपतिस्मा लेना *अच्छा* है, परन्तु वास्तव में *अनिवार्य* नहीं है। इस प्रकार उनकी शिक्षा की तरतीब इस प्रकार दिखाई देती है:

(1) शिक्षा
(2) विश्वास
(3) उद्धार
(4) बपतिस्मा

एक बार फिर, यह मरकुस 16:15, 16 में दिए यीशु के क्रम को बदल देता है:

यीशु	मनुष्य (ख)
(1) प्रचार (शिक्षा)	(1) शिक्षा
(2) विश्वास	(2) विश्वास
(3) बपतिस्मा	(3) उद्धार
(4) उद्धार	(4) बपतिस्मा

यीशु के निर्देशों का पालन हुआ (प्रेरितों 2)

उनके विपरीत जिन्होंने यीशु की तरतीब को आज बदल दिया है, प्रेरितों 2 में एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण है, जिसने मसीह द्वारा दिए क्रम को बिल्कुल उसी प्रकार से माना था।

कहानी का आरम्भ

प्रेरितों 2 में पतरस ने पहली बार सुसमाचार का पूरे ज़ोर से प्रचार किया था। उसका संदेश यीशु पर केन्द्रित था। उसके पाठ का चर्म प्रेरितों 2:36 में मिलता है: ''सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।'' यहूदियों ने जब यह सुना, ''तब सुनने वालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाइयो, हम क्या करें?'' (प्रेरितों 2:37)।

ध्यान दें कि, यहां तक, प्रेरितों 2 में यीशु के द्वारा निर्धारित क्रम का ही अनुकरण किया गया: (1) वहां *प्रचार* हुआ, और (2) इससे *विश्वास* उत्पन्न हुआ। (शब्द ''विश्वास'' आयत 37 में नहीं मिलता, परन्तु यदि सुनने वालों ने पतरस के संदेश पर विश्वास न किया होता, तो उनके ''हृदय छिद'' नहीं सकते थे।)

पतरस के श्रोताओं में से लोगों ने जानना चाहा कि उनके उद्धार के लिए परमेश्वर की

योजना में आगे क्या है। यदि पतरस यीशु के नमूने का अनुसरण करता, तो उसे क्या बताना चाहिए था? वह उन्हें बताता कि वे (3) *बपतिस्मा* लें (4) ताकि उनका *उद्धार* हो। आइए देखें कि उसने ऐसा ही किया:

''पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने [4] पापों की क्षमा के लिए [3] यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)। (''पापों की क्षमा'' पाना वैसा ही है जैसा उन पापों से उद्धार पाना। यहां पर क्रम को उल्टा किया गया है क्योंकि हिन्दी वाक्य में लिखने में तो पापों की क्षमा पहले आता है किन्तु व्यावहारिक तौर पर ''पापों की क्षमा'' के लिए ''बपतिस्मे'' का अर्थ है कि बपतिस्मा लेने से पापों की क्षमा होगी।) फिर, हम देखते हैं कि पतरस ने यीशु के निर्देशों का पालन किया:

यीशु	पतरस
(1) प्रचार (शिक्षा)	(1) प्रचार (शिक्षा)
(2) विश्वास	(2) विश्वास
(3) बपतिस्मा	(3) बपतिस्मा
(4) उद्धार	(4) उद्धार

आगे की कहानी

आइए अब आगे की कहानी को जारी रखते हैं: पतरस ने विश्वासियों को मन फिराने और बपतिस्मा लेने का महत्व बताने के बाद उन्हें प्रभु की आज्ञा मानने के लिए प्रोत्साहित किया। उसने कहा, ''क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी संतानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा'' (प्रेरितों 2:39)। यहां ''सब दूर-दूर के लोगों'' गैरयहूदियों को कहा गया है। परमेश्वर की यह योजना सब लोगों के लिए थी। हम आगे पढ़ते हैं, ''उसने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आप को इस टेढ़ी जाति से बचाओ!'' (प्रेरितों 2:40)।

आयत 41 कहती है कि ''जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने, बपतिस्मा लिया,'' और फिर बताती है, ''कि उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।'' जिन्होंने बपतिस्मा लिया था और जो इस प्रकार ''मिल गए'' थे, उन्हें अपने पापों से क्षमा मिल गई थी। आयत 47 कहती है कि ''जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उन में मिला देता था।'' वाक्यांश ''उन में'' उन्हें कहा गया है जिनका उद्धार हुआ था। अन्य शब्दों में यह कलीसिया थी, जो उद्धार पाए हुए लोगों की देह है (इफिसियों 5:23, 25) KJV में ''और प्रभु उनको जो उद्धार पाते थे, प्रतिदिन कलीसिया में मिला देता था।''

वाक्यांश ''प्रभु उन में *मिला देता* था'' पर विचार करें। मनुष्य द्वारा बनाई गई किसी स्थानीय कलीसिया की सदस्यता ली जा सकती है, परन्तु तभी जब प्रभु ने आपको अपनी विश्वव्यापी कलीसिया में मिला लिया हो। ''सदस्य'' होने और ''मिलाए जाने'' में एक

विशेष अन्तर है: जब कोई व्यक्ति एक संगठन का सदस्य बनता है, तो यह कुछ ऐसा है जो *वह* करता है परन्तु जब उसे किसी संगठन में *मिलाया* जाता है, तो यह कुछ ऐसा है जो *उसके लिए किया जाता* है। क्योंकि कोई भी व्यक्ति अपना उद्धार स्वयं नहीं कर सकता, इसलिए कोई भी उद्धार पाए हुओं की देह में स्वयं शामिल नहीं हो सकता। बल्कि, प्रभु की कलीसिया में किसी को प्रभु के द्वारा ही *मिलाया* जा सकता है, जो अपने अनुग्रह और कृपा से बचाता है!

बहुत से सम्प्रदायों में, उद्धार पाने और कलीसिया का सदस्य बनने को दो अलग-अलग कार्य माना जाता है। प्रभु की कलीसिया में ऐसा नहीं है। जो किसी व्यक्ति का उद्धार करता है वही उसे कलीसिया का सदस्य बनाता है; जो उसे कलीसिया का सदस्य बनाता है वही उसका उद्धार भी करता है। उद्धार पाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रभु स्वयं अपनी कलीसिया में मिलाता है।

विचाराधीन प्रश्न ("बपतिस्मा क्यों लिया जाए?") पर लौटते हुए एक पल के लिए प्रेरितों 2:38, 41, और 47 पर पुन: विचार करें। उद्धार पाने की इच्छा करने वाले को निश्चित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। *अतीत* की चुनौती है: वह अपने अतीत में किए पापों के दोष से राहत कैसे पा सकता है? *वर्तमान* की चुनौती है: वह प्रतिदिन जीने के लिए सामर्थ कहां से पा सकता है? *भविष्य* की चुनौती है: वह मृत्यु तक विश्वासी जीवन जीने के लिए समर्थन कहां से पा सकता है? बपतिस्मे के समय परमेश्वर उन चुनौतियों को पूरा करने के लिए उसे आवश्यक सहायता प्रदान करता है:

- *अतीत* की चुनौती: बपतिस्मा लेने वाला "(अपने) पापों की क्षमा" पाता है। दोष या पापों का भार उतरना कितनी अद्भुत बात है!
- *वर्तमान* की चुनौती: वह हर रोज़ जीने में सहायता के लिए परमेश्वर का आत्मा पाता है, जो कि बपतिस्मे के समय मिलने वाला एक दान है। यह दान बपतिस्मा लेने वाले को चमत्कार करने के योग्य नहीं बनाता, किन्तु उसे मसीही जीवन जीने के लिए आवश्यक सामर्थ देता है (देखिए रोमियों 8, विशेषकर 13 और 26 आयतें)।[9]
- *भविष्य* की चुनौती: वह स्वत: ही प्रभु के "समर्थक समूह" अर्थात कलीसिया का अंग बन जाता है। मसीह में उसके भाई व बहनें हैं जो उससे प्रेम करते हैं और उसकी सहायता करेंगे।

बपतिस्मा पाने की इच्छा रखने वाले के लिए इन आशिषों में से कोई भी एक पर्याप्त होगी परन्तु प्रभु तीनों आशिषें देता है!

सारांश

अगले पाठ में, हम प्रश्न "बपतिस्मा क्यों लिया जाए?" के अपने अध्ययन का

समापन करेंगे और इसके ''कैसे ?'' और ''किसे ?'' पर विचार करेंगे। अभी, उन आशिषों के बारे में विचार कीजिए जिनकी बौछार परमेश्वर उन पर करता है जो वचन के अनुसार बपतिस्मा लेते हैं। क्या आप ये तीनों आशिषें पाना चाहेंगे ?

पाद टिप्पणियां

[1]यह शायद यूनानी शब्द के प्रभाव से बचने के लिए किया गया होगा: यूनानी शब्द का अर्थ है ''डुबोना,'' परन्तु अनुवादक छिड़काव का उपयोग कर रहे थे। [2]अध्ययन में मैं आपको कुछ आसान यूनानी पाठ बताऊंगा। मुझे आशा है कि यह अधिक कष्टदायक नहीं होगा। [3]शब्द ''चेला'' का अर्थ है ''सीखने वाला।'' आप किसी को *शिक्षा* देकर उसे ''चेला'' बनाते हैं। [4]अधिकतर अनुवादों में मरकुस 16:15, 16 थोड़ा या बहुत है। तथापि, कई इस आयत को कोष्ठकों में और एक या दो तो नीचे टिप्पणी में देते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि मरकुस 16 के सही समापन के सम्बन्ध में कुछ विवाद हैं। कुछ भी हो, अधिकतर विद्वान सहमत हैं कि मरकुस 16:15, 16 के जो शब्द यीशु के माने जाते हैं, वे यीशु ने ही कहे थे। [5]उन में से बहुतेरे जो यह शिक्षा देते हैं, वास्तव में बच्चों को बपतिस्मा नहीं देते। वे बच्चों को डुबोने के बजाय उन पर पानी छिड़कते या उंडेलते हैं, परन्तु वे इस संस्कार को ''बपतिस्मा'' *कहते* हैं। [6]क्योंकि यह एक चौंकाने वाला विचार है, उन्होंने बपतिस्मा न पाने वाले बच्चों के प्राणों के जाने के लिए एक ऐसी जगह खोज ली जो नरक के समान बुरी नहीं है। इस जगह को, जो वचन से पूरी तरह बाहर है, ''लिम्बो'' कहा जाता है। [7]''कन्फर्मेशन'' या दृढ़ीकरण वचन के बाहर का एक और संस्कार है। वचन के बाहर की शिक्षाएं और प्रथाएं बढ़ती हुई प्रतीत होती हैं। [8]कई बार लोगों को वह दोहराने के लिए कहा जाता है जिसे ''पापी की प्रार्थना'' कहते हैं। इस प्रकार की कोई भी प्रार्थना या धारणा बाइबल में नहीं मिलती। [9]यह कहना कि पवित्र आत्मा हमें सहायता करता है, वैसा ही है जैसा यह कि परमेश्वर हमारी सहायता करता है। यदि आत्मा के काम के विषय में आपकी दिलचस्पी है, तो जिस व्यक्ति ने आपको यह पुस्तक दी है आप उससे बात करें। वह आपके प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ने में आपकी सहायता करेगा, लेकिन हो सकता है कि उसकी इच्छा हो कि पहले आप इस आरम्भिक अध्ययन को पूरा कर लें।